

डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्तिकी सत्र ८ यूसुफ अपने भाइयों के साथ फरि से मलिा उत्पत्तिकी ८

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टैड हलिडेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्तिकी पुस्तक पर उनकी शक्ति है। यह सत्र संख्या 23 है, यूसुफ अपने भाइयों के साथ फरि से मलिा, उत्पत्तिकी 42-45।

पाठ 23 में यूसुफ है जो अध्याय 42 से 45 में अपने भाइयों के साथ फरि से मलिा है, और यह मसिर में होने वाली घटनाओं से संबंधित यूसुफ की कहानी के प्रमुख भाग को शामिल करेगा।

और इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम उन मुख्य वचनों को याद करें जो घटित हो रहे हैं और कैसे ये, एक कथात्मक शैली में, यह घोषणा करते हैं कि कैसे परमेश्वर कुलपतिओं के जीवन का पर्यवेक्षण कर रहा है और किसी तरह, भविष्य के इस्राएल के जीवन का पर्यवेक्षण करेगा। और इस्राएल को यह सखाने का तरीका कि यह मामला है, राष्ट्र के संदर्भ में कुलपतिओं और फरि उनके वंशजों के बीच समानताएँ दिखाना है। और हम पाते हैं कि जैसे अब्राहम मसिर में उतरा, जैसे हम पाते हैं कि यूसुफ मसिर में उतरा, और दोनों मामलों में, हम पाते हैं कि अब्राहम उठता है और फरिने द्वारा समृद्ध होता है।

और फरि हम पाते हैं कि यूसुफ और याकब के घराने के साथ भी यही हुआ। इस्राएल के मामले में भी यही होगा। जैसा कि हम नरिगमन अध्याय 12 से 14 में पाते हैं, इस्राएल को मसिर से छुड़ाया जाएगा और वे लाल सागर को पार करके वादा किए गए देश की ओर बढ़ेंगे।

वे देखेंगे कि परमेश्वर सभी चीजों को समृद्धि के लिए काम कर रहा है, वास्तव में, आप कह सकते हैं कि इस्राएल का अस्तित्व और समृद्धि। तो आज, हम जो कुछ वचन याद करना चाहते हैं, वे हैं कि ये अध्याय यूसुफ के साथ भाइयों के मेल-मलिाप का वर्णन करेंगे। वे फरि से एक हो गए।

और इसलिए हम इसहाक और इश्माएल को याद कर सकते हैं, अगर हम फरि से मलिा भाइयों के बारे में सोच सकते हैं, क्योंकि कम से कम हम यह तो कह सकते हैं कि वे दोनों अपने पिता अब्राहम की मृत्यु और दफन के समय साथ थे। फरि, अध्याय 32 और 33 में और अधिक विस्तार से बताया गया कि याकब और एसाव का मेल-मलिाप हुआ। और अब यहाँ हम देखते हैं, परिवार के भीतर फूट जो हमेशा उस वचनबद्ध आशीर्वाद की खतरे में डालती है जिसे परमेश्वर ने मन में रखा है।

वहाँ, यूसुफ और उसके भाइयों के बीच मेल-मलिाप हुआ। अध्याय 37 में मतभेद शुरू हुआ। अब, इन अध्यायों में, खास तौर पर अध्याय 42 से 43 में।

अब, जब हम अध्याय 42 को देखते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि हम खुद को याद दिलाएँ कि अध्याय 42, श्लोक 21 में लिखा है, " उन्होंने एक दूसरे से कहा, अर्थात् भाइयों, निश्चित रूप से हम अपने भाई के कारण दण्डित हो रहे हैं। देखो, वे यह पहचानने लगे हैं कि परमेश्वर उनके जीवन में काम कर रहा है, और वे अपने अपराध और शर्म और

दण्ड का पूरा भार अनुभव कर रहे हैं जो वे अनुभव कर रहे हैं। हमने देखा कि वह कतिना व्यथित था, वह उनका पति था, वह यूसुफ था, जब यूसुफ ने हमसे अपने जीवन के लिए वनिती की।

अब, हमें अध्याय 37 में यह नहीं बताया गया है, लेकिन हमें यहाँ बताया गया है कि उन्होंने, अपने दिलों में नफरत और ठंडेपन के साथ, एक कशोर के रूप में, समूह के सबसे छोटे सदस्य के रूप में उसकी दलील को अस्वीकार कर दिया और उसका विरोध किया, लेकिन हमने नहीं सुना। इसलिए यह संकट हम पर आया है। बेशक, रूबेन कहते हैं, यह मेरी गलती नहीं है। मैं ही था, वह श्लोक 22 में कहता है, जिसने आपको बताया कि यह एक अच्छा विचार नहीं था।

बिल्कुल भी अच्छा विचार नहीं है। अब, मेरे साथ अध्याय 42 की आयत 28 को भी देखिए। उस आयत के दूसरे भाग में, जब उन्होंने पाया कि उनके बैग में चांदी है, और हम बताएंगे कि यह किस बारे में है, लेकिन इससे यह आभास होता है कि उन्होंने चांदी चुराई है।

और यही बात उन्हें बहुत बुरी लगी, कि उन पर देश की जासूसी करने का आरोप लगाया जाएगा, और उन पर चोरी करने का आरोप लगाया जाएगा। इसलिए, इस श्लोक के दूसरे भाग में कहा गया है कि उनके दिल डूब गए, और वे कांपते हुए एक-दूसरे की ओर मुड़े। वे बहुत ही शर्मिंदा हैं।

उनके मन में, वे लगभग मृत थे। वे मसिर और कनान के बीच, इस अभी तक प्रकट न हुए यूसुफ और फरि उनके पति, याकूब के बीच फंस गए थे। और उन्होंने कहा, यह क्या है जो परमेश्वर ने हमारे साथ किया है? इसलिए, जैसा कि हम इन अध्यायों को पढ़ते हैं, एक बढ़ती हुई भावना है कि परमेश्वर फरि से काम कर रहा है।

और वह जो कर रहा है, जैसा कि हमने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ अतीत में देखा है, एक परिवर्तन हो रहा है। यूसुफ के साथ भी यही होगा। और यह परिवर्तन स्वीकारोक्तों से शुरू होता है।

यह इस मान्यता से शुरू होता है कि वे पूरी तरह से ईश्वर की कृपा और दया पर निर्भर हैं। अब, इस भाषा को इस्तेमाल सीधे तौर पर नहीं किया गया है, लेकिन यहाँ विचार यह है कि वे दोषी हैं और उनके खिलाफ इस नरिणय, उनके ऊपर आने वाली सजा के द्वारा उनके अपराधों का उचित हिसाब लगाया गया है। अब, आइए अध्याय 42 और 43 के समानांतरों को देखें।

ये दोनों एक साथ काम करते हैं। पहला यह है कि हमारे मन में दो यात्राएँ हैं। इसलिए, भाइयों के पास अध्याय 42 और 43 के भीतर मसिर की दो यात्राएँ हैं।

और हमें बताया गया है कि पहली यात्रा, अध्याय 42 में बेजामनि के बना है। और फरि दूसरी यात्रा अध्याय 43 में बेजामनि के साथ है। और यह बहुत महत्वपूर्ण है कि क्या हो रहा है जब यूसुफ उन्हें धोखा देता है ताकि यह पता लगा सके कि उसके भाइयों के मामले में कोई बदलाव हुआ है या नहीं।

और वह यूसुफ के लिए सबसे कीमती चीज़ पर ध्यान केंद्रित करता है, और वह उसका भाई बनियामीन होता। यूसुफ और बनियामीन एक ही माँ, राहेल से पैदा हुए थे। वे अपने रश्ते में सबसे करीबी थे।

और साथ ही, आप देखिए, यूसुफ अपने पिता का पसंदीदा था, और भाई इसे बर्दाश्त नहीं कर सके। वे इसे बर्दाश्त नहीं कर सके। और वे इस प्रतद्वंद्वी से छुटकारा पाने के लिए हताशाजनक तरीके अपनाने लगे।

क्या यह भी वही हो सकता है जो युवा बेजामनि के साथ हो रहा है? इसमें कोई संदेह नहीं कि बेजामनि उनके पिता, यूसुफ के लिए बहुत कीमती था। बेजामनि का क्या हुआ? क्या उन्होंने पहले ही यूसुफ के प्यारे भाई, बेजामनि से खुद को अलग कर लिया था? इन सभी सेवालों के जवाब दिए जाने चाहिए। और इसलिए, उसने फैसला किया, यानी यूसुफ, खुद को प्रकट करने से पहले यह सब जान लेना चाहिए।

और इसलिए, आइए हम पहली यात्रा पर नज़र डालें जहाँ पद 1 से 5 में दस भाई हैं जो मसिर की ओर जा रहे हैं। इसलिए, हमारे लिए यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि जब याकूब उन्हें इस मशिन पर भेजता है, तो वह कहता है, मसिर जाओ जहाँ मैंने सीखा है कि अनौज है, पद 2 में, ताकि हम जीवित रहें और मरें नहीं। तो, यह जीवन और मृत्यु का मामला है।

वे एक नरिशानक स्थिति में हैं। उनके पास वास्तव में कोई विकल्प नहीं है। और यही बात बहुत महत्वपूर्ण हो जाएगी कि क्यों भाई बेजामनि को अपने साथ ले जाना चाहते हैं।

शुरुआत में वे बेजामनि को नहीं लेते, आप देखिए। उनके पिता उन्हें ऐसा करने नहीं देते थे। उन्हें ज़रूरी नहीं समझा जाता था।

खैर, आपको यह भी समझ में आ गया होगा कि याकूब हमेशा अपने बेटों के बारे में संदेहास्पद रहा है, यूसुफ का क्या हुआ। और वह उन्हें बनियामीन नहीं देने वाला था। उसके घर में पैदा हुआ आखिरी बच्चा और उसकी पसंदीदा राहेल का आखिरी बच्चा, जो बनियामीन को जन्म देते समय मर गई थी।

इसलिए, यदि आप मेरे साथ अध्याय 5 को देखें, तो आप देख सकते हैं कि वास्तव में यही हुआ। वे मसिर जाने के परिणामस्वरूप जीवित रहते हैं। और इसलिए, अध्याय 5 में, जब यूसुफ को रहस्योद्घाटन उसके भाइयों को हुआ, तो हम पाते हैं कि उसने अपने भाइयों से कहा कि यह यूसुफ है।

परेशान मत हो। वह पद 5 में कहता है, अब अपने आप पर क्रोध मत करो। हमें इसे पीछे छोड़ देना चाहिए क्योंकि जीवन बचाने के लिए ही परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा था।

और फिर श्लोक 7 में, लेकिन परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि तुम्हारे लिए पृथ्वी पर एक अवशेष बचाकर रखूं और एक महान उद्धार के द्वारा तुम्हारे जीवन को बचाऊं। जैसा कि मैंने पछिली बार टपिपर्णी की थी, यह एक ऐसा उद्धार था जो सभी लोगों के समूहों, सभी राष्ट्रों के लिए वसितारति किया गया था जो इस महान अकाल के दौरान

अपने जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक भोजन इकट्ठा करने के लिए मसिर गए थे । एक अकाल जो स्पष्ट रूप से अभूतपूर्व था।

तो, 10 भाइयों का उल्लेख इस प्रकार के घणति, कुटुम्ब प्रकार के भाइयों के समूह को दर्शाता है। 11वां भाई, बेशक, यूसुफ होगा, और फरि 12वां भाई बेजामनि होगा। तो, मसिर जाते समय, हमें बताया गया है कि पद 5 में जो अकाल पड़ा था, वह अकाल कनान देश में भी था।

तो, हम अकाल और फरि परंप्रणता, अकाल और परंप्रणता, अकाल और परंप्रणता का यह उलटा अनुभव करने जा रहे हैं। याकूब के घराने को नैतिक अकाल का अनुभव होगा, लेकिन फरि यह उलट जाएगा, और हम उनकी ओर से एक आध्यात्मिक जीवंतता, एक आध्यात्मिक नवीनीकरण, वे कौन हैं और उनका मशिन क्या है, इसके लिए एक नई सराहना देखेंगे। अब, जब हम पद 6 में आगे की बात पर आते हैं, पद 28 तक, हमारे पास यूसुफ का यह वर्णन है, जो भाइयों को प्राप्त करता है।

बेशक, वे उसे पहचान नहीं पाते। और वह कपडे पहनता है, बोलता है, काम करता है, और उसमें मसिर के महान ख्याताप्राप्त व्यक्तता की सारी शाही शान है। इसलिए, हमें पद 6 में बताया गया है, इसलिए जब यूसुफ के भाई आए, तो उन्होंने अपना मुख भूमि पर करके उसे दण्डवत् किया।

अब, इसका महत्व आप पर नहीं छूटेगा, है न? झुकना उन सपनों में दर्शाया गया है जो यूसुफ ने अध्याय 37 में देखे थे, जब पूले उसके पूले के आगे झुके और जब तारे, सूरज और चांद उसके आगे झुके। अब, तो यह वास्तव में घटित हो रहा है। लेखक चाहता है कि हम उन्हें दिखाएँ कि परमेश्वर ने जो सपने दिये हैं वे पूरे हो रहे हैं और यह उनके बीच परमेश्वर के कार्य का परिणाम है।

इसलिए, वे कनान देश से आते हैं, वे पद 7 में घोषणा करते हैं। पद 8 महत्वपूर्ण है। यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचाना, लेकिन उन्होंने उसे नहीं पहचाना। और इसलिए, यहाँ जो काम चल रहा है वह यह है कि यह धोखा एक परीक्षण के साथ बनाया गया है, जैसा कि हम देखेंगे।

अब, इस परीक्षा को सफल बनाने के लिए, उसने उन पर जासूस होने का आरोप लगाया। वह पद 14 में कहता है, इसलिए उसने उनसे पूछताछ की। उसे पता चला कि एक सबसे छोटा बेटा था जो पीछे रह गया था।

और इसलिए, यह देखने के लिए कि क्या वे वास्तव में वही हैं जो वे दावा करते हैं, अर्थात्, ईमानदार लोग जो अन्य लोगों की तरह भोजन खरीदने के मशिन पर हैं, जासूस नहीं। वह यह परीक्षण इसलिए करता है ताकि वे अपने सबसे छोटे भाई, बनियामीन को मसिर वापस लाने के लिए मजबूर हो जाएँ। श्लोक 14, तीसरे दिन, यूसुफ ने उनसे कहा, ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे, क्योंकि मैं एक नैतिक व्यक्ति हूँ, मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूँ, क्योंकि मैं परमेश्वर से डरता हूँ।

और इसलिए वह समझौता करता है, अगर आप श्लोक 19 में देखेंगे: अगर तुम ईमानदार आदमी हो, तो अपने भाइयों में से एक को यहाँ जेल में रहने दो, और बाकी तुम घर जाओ, अपने सबसे छोटे भाई को ले आओ, उसे मेरे पास वापस लाओ, और यह साबित होगा कि तुमने जो कहा वह सच है। और

फरि हमने पहले पढ़ा था, श्लोक 21 में, उन्होंने कहा, अब हम नश्चिति रूप से भगवान के न्याय के अधीन हैं। और झगड़ा जारी रहता है, रूबेन दावा करता है, अगर तुमने वही किया होता जो मैंने कहा था, तो हमारे साथ ऐसा नहीं होता।

पद 24: वहाँ वह उनसे दूर हो गया, यानी यूसुफ, और वह रोया, वह खुद से बाहर था। वह था, और वह जानता था कि वह ऐसा कर रहा था, लेकिन उसने उसे परखना जरूरी समझा, लेकिन वह जानता था कि वह उन्हें यातना दे रहा था, वह उन्हें पीड़ा दे रहा था। और इसलिए, शमिोन वह है जो जेल में पीछे रह गया।

और यूसुफ ने पद 25 में आदेश दिया, जहाँ उन्हें प्रत्येक व्यक्ति की चाँदी को उसके बोरे में वापस रखना था और उन्हें भोजन देना था। अब यह इस धोखे के तहत था कि वे यूसुफ को पैसे दे देते, उन्हें भोजन मिला जाता, वे वापस चले जाते। लेकिन, आप देखिए, चुपके से चाँदी को बदलने से, यह जासूस होने, चोर होने का आरोप पूरी तरह से विश्वसनीयता प्रदान करता।

इसलिए, वह उन्हें इस महान आतंक के लिए तैयार कर रहा है। यह कोई नरिशा नहीं है। ध्यान दें कि जैसा कि हमने पहले कहा, श्लोक 28 के अंतिम भाग में कहा गया है, उनके दिल डूब गए, और वे कांपते हुए एक दूसरे की ओर मुड़े।

यह क्या है जो परमेश्वर ने हमारे साथ किया है? खैर, वे याकूब के पास लौटते हैं और बताते हैं कि क्या हुआ था। और यह 29 से 34 आयतों में याकूब को दी गई रिपोर्ट है। और वे उस अवसर पर उनके साथ जो कुछ हुआ, उसका बहुत विस्तार से वर्णन करते हैं।

और श्लोक 33 कहता है, तब वह आदमी, या बलकविह आदमी, जो यूसुफ होगा, जो देश का स्वामी है, ने हमसे कहा, तब वे रिपोर्ट करते हैं कि उसने उनसे सबसे छोटे भाई को वापस लाने के लिए कैसे कहा। फरि, आप देखते हैं, उसने शमिोन को बंधक बना रखा है। तब मैं शमिोन को रखा कर दूंगा, क्योंकि मुझे पता चलेगा कि तुम ईमानदार लोग हो।

और फरि वह कहता है, श्लोक 34 में, तुम हमारे साथ व्यापार करना जारी रख सकते हो। और जब तुम्हें भोजन और जीविका की आवश्यकता होगी, तब तुम हमारे देश में प्रवेश कर सकते हो, और हम तुम्हें वह प्रदान करेंगे। और इसलिए, याकूब ने यह रिपोर्ट सुनने के बाद उनसे कहा, श्लोक 36 में, तुमने मुझे मेरे बच्चों से वंचित कर दिया है।

यूसुफ अब नहीं रहा। और शमिोन भी नहीं रहा। और अब तुम बनियामीन को ले जाना चाहते हो? सब कुछ मेरे खिलाफ है।

अब, हम रूबेन की ओर से एक बदलाव देखेंगे। और रूबेन ने अपने पति से कहा, श्लोक 37 में, वह ज्येष्ठ है। आपको याद होगा कि याकूब की पत्नियों या दासियों में से एक बलिहा के साथ उसका अनाचारपूर्ण संबंध था।

उसने अपने पति से कहा, " आप मेरे दोनों बेटों को मार सकते हैं। अब, यह हताशा की वजह से है। उस समय उस संस्कृति में किसी व्यक्ति के लिए उन बच्चों से ज्यादा कीमती कुछ नहीं था जो उसका नाम, उसकी वरिसत, उसकी वरिसत को आगे बढ़ाएंगे।

अब, बेशक, यह हमारी संस्कृति के लिए भी सच होगा। और वह यह है कि हम अपने बच्चों को मारने या ऐसा करने की संभावना के बारे में सोचने की हिममत नहीं करेंगे। अगर मैं उसे आपके पास वापस नहीं ला पाया तो आप मेरे दोनों बेटों को मौत की सजा दे सकते हैं।

उसे मेरे भरोसे छोड़ दो, मैं उसे लौटा ले आऊंगा। परन्तु याकूब ने कहा, मेरा पुत्र तुम्हारे संग वहां नहीं जाएगा, क्योंकि उसका भाई मर गया है।

वह अकेला बचा है। यदि आप जो यात्रा कर रहे हैं, उसमें उसे कोई नुकसान पहुँचता है, तो आप मेरे भूरे सरि को मृतकों की भूमि, अधोलोक में ले जाएंगे। दुःख में कब्र में अनुवादति।

दूसरे शब्दों में, याकूब कह रहा है, "अगर मैं तुम्हारे धोखे, तुम्हारी ईर्ष्या, या मसिर में इस आदमी द्वारा किसी अन्य कारण से बनियामीन को खो देता हूँ, तो मैं मरे जाऊंगा। तुम मेरी जान ले रहे होगे। खैर, यह हमें दूसरी यात्रा पर ले जाता है, इस मामले में, बनियामीन के साथ।

और यह कैसे होता है? मैंने पछिली बार कहा था कियाकूब और यूसुफ को प्रमुखता दी गई थी, लेकिन यहूदा को भी। और वह अध्याय 43 में प्रमुखता में आता है। तो, शुरुआती आयतों में, याकूब अपने बेटों को नरिदेश देने जा रहा है।

अब, देश में अकाल अभी भी भयंकर था, और नश्चिती रूप से, वे अपनी पहली यात्रा पर लाए गए संशोधनों का उपयोग करने जा रहे थे। इसलिए, जब उन्होंने मसिर से लाया गया सारा अनाज खा लिया, तो उनके पति ने उनसे कहा, वापस जाओ और हमारे लिए थोड़ा और भोजन खरीदो। लेकिन यहूदा, यहाँ वादा है, ने उससे कहा, आदमी ने हमें चेतावनी दी, हम वापस नहीं जा सकते जब तक कि बनियामीन हमारे साथ न जाए।

अगर आप हमारे साथ हमारे भाई को भेजेंगे, तो हम नीचे जाकर आपके लिए खाना खरीदेंगे। लेकिन हमारे लिए नीचे जाने का कोई कारण नहीं है। और हम सभी को इस मसिर के अधपिति के हाथों या तो कारावास या मृत्यु दंड भुगतना पड़ेगा।

इसलिए, इस्राएल ने पूछा, अब यहाँ याकूब से इस्राएल में नाम परिवर्तन पर ध्यान दें। तुमने उस आदमी को यह बताकर मुझे पर यह मुसीबत क्यों ला दी कि तुम्हारा एक और भाई भी है? यही बात उसने शमिोन और लेवी के बारे में भी कही थी जब यह शेकेमियों के खिलाफ किए गए जानलेवा प्रतशिोध की बात आई थी। यह हमें अध्याय 34 में याद आता है, जहाँ इन दो भाइयों और फरि उन्हें, मुझे लगता है, अन्य भाइयों द्वारा सहायता प्रदान की गई थी।

शेकेमियों को अकषम करने के लिए खतना का इस्तेमाल किया क्योंकि शेकेम, राजकुमार, जिन्हें हविवी भी कहा जाता था, ने उनकी बहन दीना का अपहरण किया, उसके साथ छेड़छाड़ की और उसे नुकसान पहुंचाया। और उन्होंने उसकी हत्या कर दी। और तुमहें याद है कियाकूब ने कहा, देखो तुमने मुझे कतिना कष्ट दिया है क्योंकि अब मैं अस्वीकार कर दिया जाऊंगा।

अब, मैं अपने खिलाफ किसी भी शत्रुता और प्रतशिोध के अधीन हो जाऊंगा। वह कहता है कि मैं अपने पड़ोसियों के नाक में बदबू बन जाऊंगा। तो इस तरह का वचिार यह है कि जहाँ भी मैं जाता हूँ, मेरे बेटे मुझे बहुत दुःख देते हैं।

खैर, आपको याद होगा कियाकूब ने अपने पति इसहाक के घराने में यही किया था। उस घराने पर बहुत बड़ा दुःख आया। तो, हम याकूब के जीवन में पूरण चकर में आ गए हैं कि उसके बेटे भी उसकी आत्मा की परीक्षा ले रहे हैं। श्लोक 8 यहूदा ने अपने पति इस्राएल से कहा, लड़के को मेरे साथ भेज दो और हम तुरंत चलेंगे ताकि हम और तुम और हमारे बच्चे जीवति रहें और मरें नहीं।

मैं खुद उसकी सुरक्षा की गारंटी लूंगा। आप मुझे उसके लिए व्यक्तगित रूप से जम्मेदार ठहरा सकते हैं। तो बेजामनि के लिए यह उनकी प्रतजिजा है।

क्या आप रूबेन, उसके प्रसताव, मैं तुम्हें अपने दो बेटे दूंगा, और फरि यहदा के बीच की हलचल को देखते हैं? वह व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी लेता है। और अगर मैं उसे वापस नहीं लाता, तो मैं अपने पूरे जीवन में तुम्हारे सामने दोष सहता रहूंगा। श्लोक 10 जैसा कि है, अगर हमने देरी नहीं की होती, तो हम पहले ही दो बार जा सकते थे और वापस आ सकते थे।

ठीक है, अब जैकब इस बात को मानने को तैयार है कि यह जरूरी है। और इसलिए, वह उन्हें उनके रास्ते पर भेज देता है। वह देश की सबसे अच्छी उपज का तोहफा भेजता है।

वह पद 11 में कहता है। फरि वह अपने छोटे भाई, बनियामीन को भी उनके साथ भेजता है। अब, वह पद 13 में कहता है, अपने भाई को भी ले जाओ और मेरे सर्वशक्तिमान परमेश्वर मैं उस आदमी के पास तुरंत वापस जाओ।

मैं कैसे करूँ? यह एक प्रार्थना है। याकूब अपने अंतिम वर्षों में प्रार्थना करने वाला व्यक्ति बन गया। जब वह एसाव से मिलने के लिए वापस आता है, तो वह कहता है कि शायद परमेश्वर उस आदमी के सामने तुम पर दया करे ताकि वह तुम्हारे दूसरे भाई और बनियामीन को तुम्हारे साथ वापस आने दे।

जहाँ तक मेरा सवाल है, अगर मैं शोक में हूँ तो मैं शोक में हूँ। अगर मैं अपने परिवार को खोने जा रहा हूँ, तो यह सब भगवान के हाथों में है। और मुझे आप सभी को भगवान के वादों, मेरे परिवार, भविष्य के लिए सौपना है।

मैं इसे एल शददाई, सर्वशक्तिमान ईश्वर को सौंप रहा हूँ। तो यही हुआ। उन्होंने भूमि के सर्वोत्तम उत्पाद वापस ले लिए।

उन्होंने चाँदी की दुगुनी मात्रा ले ली। और इसलिए, याकूब ने समझदारी से समझा कि यह देखाने का सबसे अच्छा तरीका है कि भाई जासूसी और चोरी के मामले में नरिदोष हैं, यूसुफ को उपहारों से अभिभूत करना था। अब यह याकूब के लिए अतीत में एक बार काफी अच्छा काम कर चुका था।

और आपको याकूब की दौलत, उसके झुंड की लहरें याद होंगी, जो उसके सेवकों ने एसाव के साथ मेल-मिलाप के लिए एसाव को भेंट की थीं। एसाव इससे काफी प्रभावित हुआ और खुश था कि वे मेल-मिलाप कर सकते हैं। और मुझे लगता है कि यह याकूब की ओर से पश्चाताप और वनिम्रता का संकेत था।

याकूब जानता था कि उसने अपने भाई एसाव को लूटा है। उसने उसके साथ बुरा व्यवहार किया था। तो, यह फरि से, उस आदमी और यूसुफ के प्रबंधक की ओर से कम से कम सुनवाई जीतने का एक तरीका है।

तो, यही हुआ और इसे आपके लिए श्लोक 17 में बताया गया है। उस व्यक्ति ने वैसा ही किया जैसा यूसुफ ने उसे, यानी प्रबंधक को, उन लोगों के लिए भोजन प्रस्तुत करने के लिए कहा था। और भोजन फरि से, परीक्षण का एक साधन था।

और हम इसे अध्याय के शेष भाग में वकिसति होते देखेंगे क्योंकि विहाँ उन्होंने कहा कि इसे पढ़ना शायद बेहतर होगा ताकि यह हमें श्लोक 23 से शुरू करके स्पष्ट हो जाए। ये लोग, बेशक, अपनी अपील कर रहे हैं। वे कहते हैं, हम डबल चांदी वापस लाए।

और फरि, श्लोक 23 में, यह ठीक है, प्रबंधक ने कहा। डरो मत। अब, यहाँ कुछ अंतरदृष्टि है।

तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने तुम्हारे बोरों में तुम्हें खजाना दिया है। मैंने तुम्हारी चांदी ले ली है। तब उसने शमिोन को बाहर निकाला।

तो, भाइयों के लिए चीजें बहुत सकारात्मक देखि रही हैं। ऐसा लगता है कि योजना सफल होने जा रही है। अब, जब यूसुफ आता है, तो उपहारों को देखता है, और वे फरि से झुक जाते हैं।

तुम्हें याद है कि यह यूसुफ के सपनों के अनुरूप है। यही उन्होंने पहले मामले में किया था।

अब, यहाँ दूसरा मामला है। उसने उससे पूछा कि वे कैसे हैं, और फरि उसने कहा, तुम्हारे बूढ़े पिता कैसे हैं जिनके बारे में तुमने मुझे बताया था? क्या वे अभी भी जीवित हैं? और उन्होंने कहा, हाँ, हमारे पिता अभी भी जीवित और स्वस्थ हैं। और उन्होंने उन्हें सम्मान देने के लिए झुककर प्रणाम किया। तब उसने अपने भाई बनियामीन को देखा, जो उसकी अपनी माँ का बेटा था।

उसने पूछा, क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है? और उसने कहा, भगवान तुम पर कृपा करें, मेरे बेटे। यह एक आशीर्वाद है। वह जल्दी से बाहर चला गया।

वह बहुत भावुक हो गया। यह इस बात का सबूत था कि उनके भाई बदल गए थे। उन्होंने बेजामिने का फायदा नहीं उठाया था।

और फरि वह वापस लौट आया। अब, यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है जैसा पद 32 और उसके बाद में बताया जाना चाहिए। उन्होंने अकेले ही यूसुफ की सेवा की।

तो, इसकी कल्पना करें। यहाँ वे इस घर में हैं जहाँ भोजन हो रहा है। उन्होंने यूसुफ को भाइयों से अलग और मिसिरियों से अलग अलग खाना परोसा, जो उसके साथ अकेले ही खा रहे थे क्योंकि मिसिरी लोग इब्रानियों के साथ खाना नहीं खा सकते थे।

क्योंकि मिसिरियों के लिए यह घृणति बात है। पुरुष अपनी आयु के अनुसार उसके सामने बैठे थे। ज्येष्ठ से लेकर सबसे छोटे तक।

और वे एक दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। अब, जब उनको भाग दिया गया, तो बनियामीन का भाग पाँच गुना अधिक था। और उन्होंने यूसुफ के साथ खुलकर खाया और शराब पी, यह न जानते हुए कि वह यूसुफ है।

अब हमारे लिए दो बातें महत्वपूर्ण हैं। एक तो यह कि मिसिर की संस्कृति में चरवाहों को तुच्छ समझा जाता था।

और इसलिए, वे चरवाहों के साथ खाना नहीं खाते थे। वे खुद को उच्च संस्कृति, उच्च शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते थे। और यही कारण है कि खाने के मामले में आपके पास यह अलगाव है।

एक जगह पर मिसिरी, दूसरी जगह पर इब्रानी। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आखरिकार, फरौन याकूब के परिवार को एक भूमा देने जा रहा है, एक बहुत ही समृद्ध भूमा, जिससे गोशेन कहा जाता है। और यह पुस्तक में बाद में आएगा।

लेकिन जब आप बड़ी तस्वीर देखते हैं तो महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें मिसिर की आबादी से अलग कर दिया जाएगा। अब, भाइयों से पहले, आपको याद होगा, कनानियों की संस्कृति में आत्मसात होना शुरू हुआ। और इसका एक प्रमुख उदाहरण यह है कि यहूदा ने एक कनान महिला से शादी कैसे की।

अब, नैतिक पतन भाइयों द्वारा अपने पूर्वजों की महान परंपरा को नजरअंदाज करने का परिणाम है। परमेश्वर ने अब्राहम और इसहाक से जो वादे किए थे और याकूब से भी किए थे। लेकिन मिसिरियों से अलग होने के कारण, उन्हें अपनी अद्वितीय पहचान को फिर से खोजने, परमेश्वर द्वारा उन्हें जो कुछ दिया जा रहा है, उसके प्रति अपनी प्रशंसा को पुनर्र्जीवित करने, परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए मशिन पर फिर से विचार करने, तथा पूरी दुनिया, राष्ट्रों को परमेश्वर का आशीर्वाद देने का अवसर मिला।

यह पहली बात है जिसे हमें ध्यान में रखना चाहिए। दूसरी बात यह है कि बनियामीन को पाँच गुना ज्यादा देने से भाई किस तरह से प्रतिक्रिया करेंगे? क्या यह झगड़ा होगा? क्या यह कड़वाहट होगी? क्या यह नफरत होगी? तो यह यूसुफ के सीखने का एक अतिरिक्त तरीका है। अब, अध्याय 44 में, हम पाएंगे कि भाइयों की यह परीक्षा है।

यह सामने और बीच में आता है। इसलिए, प्रबंधक से कहा जाता है, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरा प्याला, चाँदी वाला, पद 2, लो और मैं चाहता हूँ कि तुम इसे सबसे छोटे बेटे, बनियामीन के बोरे के मुँह में डाल दो, उसके अनाज के लिए चाँदी के साथ। दूसरे शब्दों में, वह चाँदी जिसका इस्तेमाल अनाज खरीदने के लिए किया गया था।

और उसने वैसा ही किया जैसा यूसुफ ने कहा था। अब, यह प्याला एक भविष्यवक्ता का प्याला है, देवताओं की इच्छा, भविष्य की खोज करने का एक साधन। अब, क्या यह केवल एक कलाकृति है? क्या यह यूसुफ के जीवन में केवल एक सजावट है? या यह कुछ ऐसा था जिसका उसने वास्तव में अपने जीवन में उपयोग किया था और उसने उस पर

वशिवास किया था, जो नश्चिती रूप से यह दर्शाता है कियूसुफ ने मसिर की संस्कृती को अधिक से अधिक आत्मसात किया था।

और इसलिए, यह मुझे कुछ हद तक घरेलू देवताओं की याद दिलाता है जनिहें राहेल ने चुरा लिया था जब वे लाबान के घर से चले गए थे। अब, सुबह में, पुरुष बस अपने काम के बारे में बैठे और चले गए। और फरि प्रबंधक उन्हें पकड़ लेता है, और उन पर दुष्ट होने का आरोप लगाता है, क्योंकि उन्होंने भवषियवाणी के लिए स्वामी का प्याला चुरा लिया है।

भाई इस बात से बहुत परेशान हैं कियह प्याला, स्वामी की यह नज्जी वस्तु, बनियामीन की बोरी में मली है। आइए कहानी के उस हिस्से को श्लोक 11 में उठाते हैं। उनमें से प्रत्येक ने जल्दी से अपनी बोरी को जमीन पर उतारा और उसे खोला।

फरि प्रबंधक ने सबसे बड़े से शुरू करके सबसे छोटे तक खोज जारी रखी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि जब हर एक की बोरी मली तो क्या हुआ होगा? और प्याला बनियामीन की बोरी में मला। इस पर उन्होंने अपने कपड़े फाड़ लिए।

फरि से कपड़ों का वही रूपांकन है। यह आपदा के प्रतिसबसे कटु, कटु भावनात्मक प्रतिक्रिया का संकेत था। यह वनिाशकारी है।

क्या यह कुछ अलग हो सकता था? रूबेन को इससे ज्यादा खुशी होती अगर इसका मतलब उसके अपने बेटों को खोना होता। यहूदा अपनी जान देना चाहता। बेजामनि।

हमारे पति के लिए अनमोल बनियामीन। तो, हम फरि से आयत 16 में आगे बढ़ना चाहते हैं। यहाँ यहूदा समूह का नेतृत्व करते हुए क्या कहता है।

हम क्या कह सकते हैं? हम क्या कह सकते हैं? हम अपनी बेगुनाही कैसे साबति कर सकते हैं? श्लोक 16. परमेश्वर ने आपके सेवकों के अपराध को उजागर कर दिया है। अब हम, मेरे प्रभु, दास हैं।

हम खुद और वह व्यक्ति जिसके पास प्याला था। सब कुछ खो गया है। और फरि, श्लोक 18 में, यहूदा उसके पास गया और कहा, हे मेरे प्रभु, कृपया अपने सेवकों को मेरे प्रभु से एक बात कहने दें।

और वह अपने पापों को स्वीकार करता है। वह भाई के पापों को स्वीकार करता है। और वह बताता है कि क्या हुआ था।

और वह पद 30 में कहता है, "अब, यदा मैं अपने पति, आपके सेवक के पास वापस जाता हूँ, तो लड़का हमारे साथ नहीं होगा, और यदा मेरे पति, जनिका जीवन उनके लड़के के जीवन से बहुत जुड़ा हुआ है, देखते हैं कि लड़का वहाँ नहीं है, तो वे मर जाएंगे। आपके सेवक हमारे पति के बड़े सिरों को दुख में कब्र में ले जाएंगे। आपके सेवक ने, अपने बारे में बोलते हुए, मेरे पति को लड़के की सुरक्षा की गारंटी दी।

मैंने कहा, अगर मैं उसे वापस आपके पास नहीं ला पाया, तो मैं अपने पति, आपके सामने सारी ज़िदगी दोष सहता रहूँगा। यूसुफ को पता चल रहा है कि भाइयों को अपने पति के

साथ जो कुछ भी कथिया, उसके लिए सच्चा पश्चात्ताप है, जब उन्होंने यूसुफ को बेच दिया था। और वे बनियामीन को खोकर फरि से ऐसा नहीं करेंगे।

इसलिए, बनियामीन को मुक्त करने, उसे उनके पिता के पास वापस लाने की अपील की गई है। अब, जब अध्याय 45 की बात आती है, तो यूसुफ अपनी पहचान, श्लोक 1-38 में प्रकट करता है। और इसलिए, पहले 15 श्लोकों में, वह खुद को ज्ञात करने जा रहा है।

और यूसुफ अब अपने सभी सेवकों के सामने खुद को नयित्प्रति नहीं कर सका। और वह चिल्लाया, हॉल खाली करो! वह इतनी जोर से रोया कि भिसिरियों ने उसे सुना, और फरौन के घराने ने इसके बारे में सुना। यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, यहाँ पद 3 में, क्या घोषणा है, भाइयों की ओर से कतिना भयानक कर्षण।

मैं यूसुफ हूँ। फरि वह अपने पिता के प्रति अपने प्रिय और जुनून को दिखाता है। क्या मेरे पिता अभी भी जीवित हैं? लेकिन उसके भाई जवाब नहीं दे पाते क्योंकि वे उसकी मौजूदगी से डरे हुए हैं।

तब यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, मेरे निकट आओ। मुझे स्मरण है कि जब एसाव दौड़कर याकब के पास गया, तब उन्होंने गले मलिकर चूमा। तब उसने कहा, मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ, जैसा तुमने मसिर में बेच दिया था।

अब, उसे उन्हें मनाना होगा। और अब, परेशान मत हो और मुझे यहाँ बेचने के लिए खुद पर गुस्सा मत करो क्योंकि यह जीवन बचाने के लिए था कि भगवान ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा था। पिछले दो सालों से, देश में अकाल पड़ा है, और अगले पांच सालों तक, वे हल नहीं चलाएंगे और कटाई नहीं करेंगे।

लेकिन परमेश्वर ने, पद 7 में, मुझे तुम्हारे आगे भेजा है कि तुम्हारे लिए पृथ्वी पर एक अवशेष बचाकर रखूँ और एक महान उद्धार के द्वारा तुम्हारे जीवन को बचाऊँ। तो, दो तरीके हैं जिनसे हम देखते हैं कि यह स्पष्ट है। पहला तरीका वह है जैसा तुम भूल गए हो।

आप शायद अध्याय 37 में भूल गए होंगे, जब यूसुफ को उसके पिता याकब ने अपने भाइयों का पता लगाने और रिपोर्ट लाने के लिए शेकेम भेजा था, तो वह शेकेम के इलाके में पहुँचा। उसके भाई नहीं मिले, और वह किसी खोए हुए व्यक्ति के बारे में सोच रहा था। और हमें बस इतना बताया गया है कि यह आदमी था।

उसकी पहचान नहीं हो पाई है। उस समय, हमने इस संभावना के बारे में बात की थी कि वह व्यक्ति वास्तव में प्रभु का एक दूत था जो खुद को एक मनुष्य के रूप में प्रकट कर रहा था या फरि ईश्वर स्वयं खुद को एक मनुष्य के रूप में प्रकट कर रहा था। लेकिन यहाँ ईश्वर की गुप्तता, ईश्वर का कार्य, वह कहता है, तुम्हारे भाई दोतान में चले गए हैं, और वहाँ तुम उन्हें पाओगे।

परमेश्वर ने इस व्यक्ति को एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जिसके द्वारा यूसुफ और उसके भाई उस दिन दोतान में एकत्र होंगे। परमेश्वर घटनाओं के एक सबसे असामान्य मोड़ में फरि से काम कर रहा है ताकि भाई एकजुटता, एकता में फरि से एकजुट हो जाएँ। दूसरा तरीका है जिससे परमेश्वर ने सपनों का इस्तेमाल किया।

अध्याय 37 में सपनों ने दिखाया कि पिलों और तारों के मामले में, एक एकीकरण था, स्वामी और भाइयों के बीच काम पर एक पुनर्मलिन। तो, इस दृष्टि से, हम अध्याय 50 को देखते हैं। और यह हमारे लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि याकूब की मृत्यु और उसके दफन के बाद, बेटों में उनका डर फरि से जाग उठता है।

मुझे लगता है कि उन्होंने तर्क दिया कि जब तक याकूब जीवित है, यूसुफ उनके साथ कुछ नहीं करेगा। और इसलिए, वे पद 18 में स्वीकार करते हैं, उसके भाई यूसुफ के पास आए और कहा, हम आपके दास हैं। लेकिन यूसुफ ने उनसे कहा, डरो मत।

क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूँ? तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया था। लेकिन परमेश्वर ने इसे भलाई के लिए किया ताकि जो कुछ हो रहा है उसे पूरा किया जा सके: कई लोगों की जान बचाई जा सके। इसलिए, यही रवैया यूसुफ अपनाता है।

वह भी एक बदलाव से गुजरता है। वह अब और भूलना नहीं चाहता। आपको उसके बच्चे का नाम मनश्शे रखना याद होगा।

अपने घराने के सभी दुखों को सहना। बल्कि वह अपने पति याकूब की वरिसत को अपनाना चाहता है, और परमेश्वर की बड़ी योजना को पहचानना चाहता है। और यह हमारे लिए यूसुफ की इस कहानी से सीखना महत्वपूर्ण है।

जो दुख, जो परीक्षाएँ यूसुफ ने झेलीं, जो याकूब ने झेलीं, जो भाई खुद साल दर साल अपराध और शर्मदिगी झेलते रहे, उन सभी दुखों का अर्थ था। यह मनमानी नहीं था। यह मनमानी नहीं थी।

यह महज एक संयोग नहीं था। यह ईश्वर की एक घटना थी। और जब हम अपने नुकसान, अपने दुखों, अपने संघर्षों, पापियों के रूप में अपनी असफलताओं, और अपनी अनैतिकताओं, और दूसरों के प्रति अपने अपराधों को लेते हैं, जब हम इसे ईश्वर की मानवीय जवाबदेही, मानवीय ज़िम्मेदारी, मानवीय कार्य के बड़े ढाँचे में रखते हैं, तो वह अभी भी जीवन के इन धागों को ले रहा है, उन्हें एक योजना के सुंदर परिधान में बुन रहा है जिसके द्वारा वह उन सभी लोगों के लिए आशीर्वाद के उन वादों को पूरा कर सकता है जिन्हें हमारे पहले माता-पिता के पाप के कारण ईडन गार्डन से खतरा था।

और फरि, जैसा कि हम उत्पत्तिके माध्यम से इसका पता लगाते हैं, हम बार-बार उस खतरे को देखते हैं जो उत्पन्न होगा, लेकिन एक ऐसा खतरा जो परमेश्वर की कृपा और उस खतरे पर वज्रिय पाने से बड़ा नहीं था, चाहे वह कोई भी हो। और अब वह कहता है, वापस जाओ, याकूब को ले आओ, परिवारों को ले आओ, उन्हें यहाँ लाओ। तुम्हारे साथ एक प्रावधान किया जाएगा।

पद 14. तब उसने अपने भाई बनियामीन को गले लगाया और रोया, और बनियामीन ने भी रोते हुए उसे गले लगाया। और उसने अपने सब भाइयों को चूमा और उनके ऊपर रोया।

उसके बाद, उसके भाइयों ने उससे बात की। अब यह थोड़ा अलग लगता है, है न? उसके बाद, उसके भाइयों ने उससे बात की। मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने कसि बार में बात की।

लेकिन आप देख सकते हैं कि वे अपने भाई यूसुफ के साथ अनुकूल रूप से शांति में थे। अब, इसमें क्या महत्वपूर्ण है? यह अभिव्यक्ति है कि यूसुफ के दिल में और विशेष रूप से इन भाइयों के दिलों में हुए परिवर्तन को दिखाती है। और यहाँ कारण बताया गया है।

अध्याय 37, श्लोक 4 में हमें बताया गया है कि यूसुफ़ पर किए गए एहसान के कारण वे अपने भाई से इतनी नफरत करते थे कि वे उससे बात भी नहीं करते थे। और अब इतने सालों के बाद, इतने सारे परीक्षणों के बाद, यह इस परिवार में हुए एक बड़े बदलाव का संकेत है। अब, फ़रौन की स्वीकृति के साथ, हम पाते हैं कि जब वे वापस लौटेंगे तो फ़रौन उनके रहने के लिए एक जगह अलग रखने जा रहा है।

और इसलिए, फ़रौन यूसुफ़ को समृद्ध बनाता है। वह चाहता है कि यूसुफ़ अपने परिवार, अपने पति और परिवारों को साथ लाए। और फिर वह कहता है, जैसा कि फ़रौन ने पद 17 में कहा है, मैं तुम्हें मसिर की भूमिका सबसे अच्छा हिसा दूंगा, और तुम भूमिका सबसे अच्छी चीजों का आनंद ले सकते हो।

और फिर आयत 20 में, मसिर की सबसे अच्छी चीजें। और फिर आयत 23 में, मसिर की सबसे अच्छी चीजें। तब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को भेजा, आयत 24, और कहा, रास्ते में झगड़ा मत करो।

मुझे लगता है कि वह अपने भाइयों की प्रकृति को जानता है, है न? लेकिन साथ ही, देर मत करो। तुम मेरे पति के साथ जा रहे हो और लौट रहे हो। इसलिए, वे मसिर से बाहर चले गए, उनके आगे अब्राहम था, और वे कनान देश में अपने पति याकूब के पास पहुंचे।

उन्होंने उसे बताया कि यूसुफ़ अभी भी जीवित है। यह पुनरुत्थान की बू आती है। याकूब के मन में यूसुफ़ अभी भी जीवित है।

वास्तव में, वह पूरे मसिर का शासक है। याकूब दंग रह गया। मैं उसे दोष नहीं देता।

जब उन्होंने यूसुफ़ को सब कुछ बताया जो उसने उनसे कहा था, तो उसने उन पर विश्वास नहीं किया। और जब उसने गाड़ियाँ देखीं, तो यूसुफ़ ने उसे वापस ले जाने के लिए भेजा।

उनके पति याकूब की आत्मा पुनर्जीवित हो गई। याकूब भी पुनर्जीवित हो गया। और इस्राएल ने कहा, मुझे यकीन है कि मेरा बेटा यूसुफ़ अभी भी जीवित है।

मैं मरने से पहले जाकर उससे मिलूंगा। उसके बाद हमारा अगला सत्र मसिर में परिवार की शानदार वापसी को दर्शाता है, जिसकी शुरुआत अध्याय 46 से होती है।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्तिका पुस्तक पर उनकी शक्ति है। यह सत्र संख्या 23 है, यूसुफ़ अपने भाइयों के साथ फिर से मिला, उत्पत्तिका 42-45।